International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 23-01-2019; Accepted: 24-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 78-81

सतना जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'हेड स्टार्ट योजना' का शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

जर्नादन प्रसाद मिश्र[1], डॉ0 जय सिंह[2]

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले में सतना जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'हेड स्टार्ट योजना' का शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के सतना जिले में 'हेडर्स्टाट योजना' अन्तर्गत शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है। 'हेडर्स्टाट योजना' के क्रियान्वयन से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। शोध क्षेत्र मे 'हेडर्स्टाट योजना के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अंतर है। शोध क्षेत्र मे 'हेडर्स्टाट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों में अध्ययनतर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों अध्ययनरत विद्यार्थियों से अधिक होती है।

मूल शब्द : सतना जिला, प्रारंभिक विद्यालय, हेड स्टार्ट योजना, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। अतीतकाल से मनुष्य जागरूक रहकर अपनी वाक्–शक्ति द्वारा अपने व्यवहारिक अनुभव–भण्डार का संचार व्यक्ति और व्यक्ति की बीच तथा समुदाय और समुदाय की बीच पीढ़ी दर पीढ़ी करता आया है। प्रारंभ में शिक्षा एक जैविक आवश्यकता के रूप में विकसित हुई। वातावरण से निरंतर संघर्ष करते हुए मनुष्य ने जीना सीखा और मूल प्रवृत्तियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं की संतुष्टि हेतु, संकेतों के माध्यम से उन्हें अभिव्यक्ति करना सीखा। इन्हीं संकेतों के विकसित स्वरूप ने वाक् शक्ति के साथ शब्दों का रूप ले लिया इस प्रकार आदिम युगीन शिक्षा का प्रारम्भ हुआ।

आदिम युगीन शिक्षा में, शिक्षा का स्वरूप, जटिल एवं प्रक्रिया सतत् थी। उसका उद्देश्य चरित्र, प्रवृत्ति, कौशल और नैतिक गुणों का व्यक्ति में निर्माण करना था, ऋतु परिवर्तनों, प्राकृतिक सौन्दर्यता, जानवरों की जीवन–पद्धति, बड़े–बूढ़ों का अनुभव आदि, मानव को शिक्षा प्रदान करते थे। इस प्रकार की स्वाभाविक एवं अनौपचारिक शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त प्राचीन है। आज भी प्रारंभिक शिक्षा इसी प्रकार बच्चों को माता–पिता एवं परिवार तथा समाज द्वारा अनौपचारिक एवं स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है। 'पाल गुडमैन' ने इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है– "आदिम और अत्यन्त सभ्य समाज, दोनों में अभी तक अधिकांश बच्चों की शिक्षा, जीवन की सहज प्रक्रिया द्वारा ही सम्पन्न हुई है, न कि शिक्षा देने के लिए विशेष रूप से खोली गई शालाओं द्वारा।"[1]

बच्चों और प्रौढ़ों को भी शिक्षा के तत्व उनके वातावरण परिवार और समाज से प्राप्त होते हैं, चाहे वे तत्व अनौपचारिक रूप से या औपचारिक रूप से प्राप्त से प्राप्त हों। जी.आर.हाब्स तथा एल. एस. हाब्स भी इसी का समर्थन करते हैं– "शिक्षा वह औपचारिक या अनौपचारिक प्रक्रिया है, जो मानव प्राणियों की भावनाओं के विकास में सहायता करती है।" उन्हें सीधे या प्रत्यक्ष अनुभव से जीवन के जटिलतम क्रिया से शिक्षा मिलती है। इस प्रकार प्राप्त शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है जब यह स्पष्ट होता है कि "अनुभव– जन्य ज्ञान शालेय ज्ञान के लिए आकर्षण उत्पन्न करता है और शालेय ज्ञान वातावरण से प्राप्त ज्ञान को संगठित और संकल्पित करने में सहायक होता हैं।[2]

2. अध्ययन की आवश्यकता

"रिचार्ड हुकर" ने चेतावनी दी थी कि– "परिवर्तन सदैव असुविधाजनक होता है, चाहे वह भले से बुरे की ओर या बुरे से भले की ओर ही क्यों न हो।" वर्तमान समय का कम्प्यूटरीकरण सिद्धान्त इसका ज्वलन्त उदाहरण है। हेडस्टार्ट योजना के तहत संगणकों का उपयोग, शिक्षा में गुणात्मक विकास हेतु किया जा रहा है जिसमें म.प्र. सरकार द्वारा किये गये व्यय का प्रतिफल एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करना आवश्यक है। यह योजना किस स्तर तक सफल रही है और इसके पूर्ण क्रियान्वयन में कौन–कौन सी बाधाएँ आ रही हैं, इसकी समीक्षा भी जरूरी है। प्रदाय सामग्री का समुचित उपयोग उस योजना हेतु किस स्तर तक हो रहा है, इन सब तथ्यों का अनुवीक्षण होना चाहिए, ताकि योजना अपने लक्ष्यगत उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो सके।

3. उद्देश्य

प्रत्येक कार्य का लक्ष्यगत उद्देश्य होता है। उद्देश्य विहीन कार्य लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। किसी शोध समस्या के चयन के पूर्व ही उद्देश्यों का निर्धारण आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैः

- 'हेड स्टार्ट योजना' की प्रशासनिक–शैक्षणिक उपयोगिता का अध्ययन करना।
- हेड स्टार्ट जन शिक्षा केन्द्रों में, कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

''प्रयोग से प्राप्त परिणाम तथा परिकल्पना से निर्दृष्ट परिणाम मे

कोई अंतर नही है।'' उक्त कथन से आशय यह है कि शोधार्थी शोध कार्य के पूर्व परिकल्पनाएँ निर्मित करता है, ये परिकल्पनाएँ ही सम्भावित निष्कर्ष होती है, इसे ही परिकल्पना से निर्दृष्ट परिणाम कहते है।

शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के संकलन के पश्चात विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्ष ही प्रयोग से प्राप्त परिणाम है।

इस प्रकार अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध कार्य के पूर्व की गयी परिकल्पना अर्थात संभावित निष्कर्ष व शोध कार्य पश्चात प्राप्त निश्कर्ष मे जब कोई अंतर नहीं होता तब उसे शून्य परिकल्पना कहते है।

उक्त परिभाषा के अनुसार परिकल्पना सत्यापित होती है तो वह शून्य परिकल्पना कहलाती है।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होगे–

1. सतना जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सुहावल), चित्रकूट (मझगवॉ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक), जनशिक्षा केन्द्र, ब्लाक शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले दक्षता सम्बन्धी कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्श

चूंकि सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी प्रारंभिक स्तर (प्राथमिक व माध्यमिक) विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 विद्यालय कुल 80 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया जाएगा। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा जायेगा कि सभी विकासखण्डों के प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो।

शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित हेड स्टार्ट योजना के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 10–10 छात्र–छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया जायेगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित बच्चों के गुणवत्ता–स्तर हेतु परीक्षण पत्रक / कक्षा 6 वीं गणित का परीक्षण किया जायेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, रीना (2007)[2], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी. के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6] त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[7] श्रीवास्तव तथा डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[8] ने शोध विधि एवं छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है।

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "सतना जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 1: सतना जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन का अध्ययन

समूह		ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय	शहरी क्षेत्र के विद्यालय
समूह की संख्या (N)		250	150
मध्यमान (M)		48.28	49.86
मानक विचलन (SD)		21.76	21.87
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.70	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में सतना जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 48.28 तथा 49.86 तथा मानक विचलन क्रमशः 21.76 तथा 21.87 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.70 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से अधिक है। अतः सतना जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना **"**सतना जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों में 'हेड स्टार्ट योजना' के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नही है।**"** स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

समूह		कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालय	कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालय
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		50.10	41.45
मानक विचलन (SD)		16.64	17.51
क्रान्तिक निष्पत्ति (ब्त्ण्द्ध		7.16	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

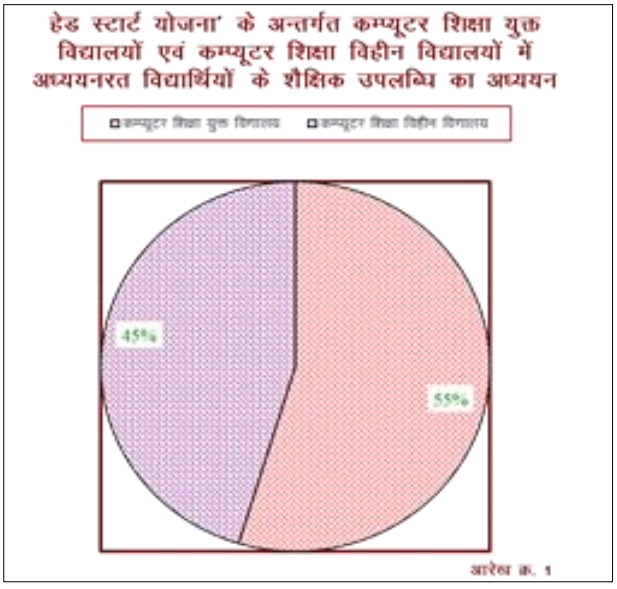

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारिणी में 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया। दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 50.10 तथा 41.45 प्राप्त हुआ। जबकि मानक विचलन क्रमशः 16.64 तथा 17.51 प्राप्त हुआ। सार्थकता के लिए (C.R. Test) की गणना की गयी जिसका मान 7.16 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से अधिक है इससे यह पता चलता है कि दोनों समूहों में सार्थक अन्तर विद्यमान है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना : 'हेड स्टार्ट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

11. निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्ननुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के सतना जिले में 'हेडर्स्टाट योजना' अन्तर्गत शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. 'हेडर्स्टाट योजना' के क्रियान्वयन से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
3. शोध क्षेत्र मे 'हेडर्स्टाट योजना के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों एवं कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अंतर है।
4. शोध क्षेत्र मे 'हेडर्स्टाट योजना' के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा युक्त विद्यालयों में अध्ययनतर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम्प्यूटर शिक्षा विहीन विद्यालयों अध्ययनरत विद्यार्थियों से अधिक होती है।

12. सन्दर्भ

1. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, पाठक एवं त्यागी विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ 5
2. शर्मा आर.सी. शिक्षा प्रशासन, केन्द्रीय विद्यालय संगठन देलही 1970, पृष्ठ 20.
3. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.

4. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(9):05-07.
8. श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में)" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 3:63-65.